International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-04-2026, Accepted: 31-05-2026, Published: 15-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 187-189

ओड़िआ वैष्णव साहित्य में निर्गुणवादी चेतना

विष्णुप्रिया भुक्ता[1], डॉ स्नेहलता दास[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12153

सारांश
ओड़िआ साहित्य की वैष्णव परम्परा में निर्गुण तत्वों का एक समन्वित रूप देखने को मिलता है, जो भारतीय भक्तिधारा का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। इस शोध–लेख में, ओड़िआ निर्गुण साहित्य के विकास में वैष्णव कवियों के योगदान पर विचार किया गया है। ओड़िआ साहित्य में निर्गुण और सगुण की धाराएँ परस्पर विरोधी न होकर समन्वित रूप से विकसित हुई हैं। सारला दास से लेकर पंचसखा के कवियों तथा उनके परवर्ती कवियों तक, निर्गुण ब्रह्म, शून्यवाद, अद्वैतवाद, पिंड–ब्रह्मांड, योग–साधना आदि अवधारणाएँ वैष्णव भक्ति साहित्य में अंतर्निहित हैं। इस अध्ययन में बौद्ध शून्यवाद, वेदान्त के अद्वैतवाद, नाथ–योग परम्परा के प्रभाव का विश्लेषण करने के साथ–साथ ओड़िआ वैष्णव कवियों ने जगन्नाथ, कृष्ण, राम जैसे सगुण अवतारों को किस प्रकार निर्गुण ब्रह्म के रूप में स्वीकार किया है, इसका भी विश्लेषण किया गया है। ओड़िआ साहित्य के, 'दांडी रामायण', 'भागबत', 'शून्य संहिता', 'ब्रह्मगीता', 'बिराटगीता' जैसे भक्तिपरक ग्रंथों के उदाहरण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे योग–साधना, उलट साधना, षड़चक्र, गुरु–तत्त्व, आत्मज्ञान जैसे निर्गुण तत्व ओड़िआ वैष्णव साहित्य के आधार रहे हैं।

मूल शब्दः ओड़िआ निगुण साहित्य, शून्यवाद, निर्गुण वैष्णव साहित्य, योग साधना, पिंड ब्रह्मांड, बलराम दास, अद्वैतवाद, बौद्ध दर्शन, तुलसीदास, समन्वयवाद

ओड़िआ निर्गुण साहित्य के विकास में ओड़िआ के वैष्णव कवियों का महत्वपूर्ण योगदान है। सारला दास, बलराम दास तथा पंचसखा के अन्य कवियों से ले कर भीम भोई एवं राजीव दास तक लगभग सभी विष्णु भक्त कवि विष्णु के समस्त अवतार रूप को निर्गुण परमब्रह्म का ही रूप मानते हैं। उत्कल प्रांत में श्री चौतन्य के प्रभाव से यहाँ के बहुत से विशिष्ट कवियों ने जैसे अभिमन्यु सामंत सिंहार, गोपालकृष्ण आदि ने कृष्ण के लीला एवं कृष्ण प्रेम को आधार बना कर साहित्य की रचना की है। लेकिन श्री चौतन्य के आने से बहुत पहले यहाँ के कवियों पर बौद्ध दर्शन के शून्यवाद और वेदांत के अद्वैतवाद का प्रभाव पड़ चुका था। चौतन्य के मतवाद के प्रभाव से इसमें कुछ परिवर्तन तो हुआ लेकिन शून्यवाद के इस सिद्धांत का प्रभाव पूरी तरह से कम नहीं हुआ। चौतन्य के भक्ति धारा के कुछ कवियों को उनके मित्र के रूप में देखा जाता है। उनको पंचसखा के नाम से जाना जाता है। पंचसखा में बलराम दास, जगन्नाथ दास, अनंत दास, अच्युतानंद दास और यशवंत दास का नाम लिया जाता है। उनके साहित्य में सगुण उपासना के साथ–साथ निर्गुण, निराकार परमब्रह्म के प्रति भी भक्ति दृष्टिगत होती है। अच्युतानंद दास उन्हीं के पंचसखाओं में से एक हैं, जिन्होंने 'शून्य संहिता' की रचना की है। यह ग्रंथ मुख्यतः शून्यवाद, निराकार भक्ति, योग दर्शन तथा रहस्यवादी साधना पर आधारित है। पंचसखा साहित्य की ज्ञानमिश्रित भक्तिधारा का यह एक प्रमुख ग्रंथ है।

ओड़िआ साहित्य में ज्ञानाश्रयी वैष्णव धर्म की धारा का श्रेय यहाँ के बौद्ध और नाथ अवलंबियों को भी जाता है। यहाँ के संत परम्परा में शून्य–निर्गुण ब्रह्म के अव्यक्त सत्ता को स्वीकार किया गया है। लेकिन उन्होंने बुद्ध–जगन्नाथ–पुरुषोत्तम के व्यक्त रूप को अव्यक्त शून्य–निर्गुण दारूब्रह्म के रूप में भी ग्रहण किया था। निर्गुण मार्गी कवियों के अनुसार संसार में ईश्वर के जितने भी सगुण रूप हैं, उन सब में व्यक्त–निर्गुण–जगन्नाथ के अव्यक्त निर्गुण तत्व का ही वास है। ओड़िशा के वैष्णव कवियों पर भी इस मत का गहरा प्रभाव पड़ा है। वैदिक युग में विकसित इस निर्गुण भावना का महत्व उत्कल परम्परा के बौद्ध, नाथ, शैव और वैष्णव धर्म पर भी बना रहा है। वैष्णव धर्म के क्रमिक विकास में योग प्रधान निर्गुण भावना की छाप देखने को मिलती है। निर्गुण और सगुण का यह समन्वय आदिकवि सारला दास के भी पहले से है। सारला दास के महाभारत में लक्ष्मी–पार्वती संवाद में भी इसका दृष्टांत मिलता है।

सारला दास के साहित्य के अनेक स्थलों पर निर्गुण मत का प्रभाव मिलता है। उनके महाभारत के बलराम शून्य–निरंजन और निराकार हैं। उन्होंने जगन्नाथ और श्री कृष्ण को अभिन्न माना है। उनके अनुसार श्री कृष्ण शून्यमय हैं और बुद्ध के रूप में नीलाचल (जगन्नाथ का मंदिर) में रहते थे। उनके महाभारत में कृष्ण ने स्वयं अपना परिचय निर्गुण ब्रह्म के रूप में दिया है। युधिष्ठिर ने भी कृष्ण की स्तुति शून्य निराकार के रूप में की है। कई स्थानों पर निर्गुण ब्रह्म के दस अवतारों का उल्लेख भी है। सारला दास ने केवल विष्णु को ही निराकार और निर्गुण नहीं माना है बल्कि उनके सभी अवतार एवं समस्त देवी–देवताओं को भी उस निर्गुण ब्रह्म का ही रूप माना है।

पंचसखा युग के कवि बलराम दास पर भी इस मत का प्रभाव देखा जाता है। वे पंचसखाओं में सबसे ज्येष्ठ थे तथा वैष्णव कवि थे। उनके समस्त ग्रंथों में निर्गुण तत्व की व्याख्या मिलती है। उनके द्वारा रचित श्दांडी रामायण' में इसके कई उदाहरण मिलते हैं। उनके राम जगन्नाथ के अवतार हैं। बलराम दास जगन्नाथ को निराकार परमब्रह्म का ही रूप मानते हैं। सगुण रूप की आराधना करते हुए भी वे निर्गुण ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार करते हैं और उन्हें ही परमब्रह्म मानते हैं। तुलसीदास की भाँति बलराम दास की राम कथा में भी सगुण और निर्गुण का समन्वय देखने को मिलता है। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'दांडी रामायण' में सर्वत्र राम को परमब्रह्म के रूप में वर्णन किया गया है। शबरी प्रसंग में भी इसका स्पष्ट चित्र मिलता है जहां शबरी फल अर्पित करते हुए श्रीराम की स्तुति करती है – "तुमे ही राम परमब्रह्म शंख चक्रधारी" (अरण्य कांड, शबरी प्रसंग)। वानर–राज बाली भी अपने मृत्यु के समय राम की स्तुति करता है। यहाँ बाली ने भी श्रीराम को परमब्रह्म का प्रत्यक्ष रूप माना है (किष्किन्धा कांड, बालि वध

प्रसंग) । इसी प्रकार बलराम दास के अन्य ग्रंथों में भी शून्यवाद और निर्गुणवाद प्रतिपादित हुआ है।

जगन्नाथ दास, अच्युतानंद दास, मार्कण्डेय दास और उनके परवर्ती कवियों पर इस शून्यवाद का प्रभाव है। जगन्नाथ दास ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'भागबत' में सर्वत्र निर्गुण ब्रह्म का महिमा गान किया है। उनके अन्य ग्रंथों 'तुलाभिणा', 'अर्थ कोईली' आदि में शून्य ब्रह्मवाद के साथ–साथ योग साधना, सृष्टि तत्व, पिंड ब्रह्मांडवाद आदि की विस्तृत व्याख्या मिलती है। शून्य निर्गुण धारा के मत को उत्कल के वैष्णव साहित्य में प्रतिष्ठित करने में चौतन्य की विशेष भूमिका रही है। उन्होंने अपने ग्रंथ 'निर्गुण माहात्म्य' एवं 'विष्णु गर्भ पुराण' में निर्गुण सत्ता की व्याख्या की है। उनके अनुसार विष्णु अपने विराट रूप में सबके शरीर में वास करते हैं। चेतन और जड़ दोनों में उनका वास है। निर्गुण परमब्रह्म की सर्वव्यापकता का वर्णन कवि ने अपने दोनों ग्रंथों में किया है। उनका ये भी मानना है कि ये निर्गुण विष्णु अनुभव से प्राप्त होते हैं। अर्थात् विष्णु अनंत माया से आत्मा के भीतर रहते हैं। केवल साधना बल से उनको प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए साधना का महत्व निर्गुण मत की विशेषता है जिसका प्रतिपादन वैष्णव कवियों के साहित्य में भी हुआ है। निर्गुण चेतना बौद्ध मत को आत्मसात् करते हुए कैसे वैष्णव मत में भी अपना प्रभाव बनाए रखती है उसका दृष्टांत चौतन्य के इन दो ग्रंथों में देखा जा सकता है। कवि मार्कण्डेय दास, सारला दास के बाद और पंचसखा से पहले आते हैं। उनके द्वारा रचित 'महाभास' नामक ग्रंथ में 'रामतारक' मंत्र को उन्होंने निर्गुण ब्रह्म के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया है।

उत्कल के वैष्णव साहित्य पर योग साधना के मत का प्रभाव भी पड़ा है। ओड़िआ निर्गुण मत में चित्तवृति निरोध मूलक साधना का विशेष महत्व है। इसका अर्थ है अपने मन को निरोध कर एकाग्रता के साथ साधना कर अपने अंतर में ही ब्रह्म का दर्शन करना। कुछ आलोचकों के मत में इस प्रक्रिया का निर्वाह वैदिक युग से होते आ रहा है। इसे निर्गुण धारा वाले उलट साधना भी कहते हैं। इस तरह का उल्लेख 'कठोपनिषद' में भी मिलता है जहां शरीर को एक उल्टे वृक्ष के साथ तुलना की गयी है किसका मूल भाग ऊपर है और अग्रभाग नीचे। बौद्धों में भी इसकी चर्चा मिलती है। लुइपा ने शरीर को एक वृक्ष और पाँच कर्मेंद्रियों को इसकी शाखा कहा है। सांसारिक विषयों के आकर्षण से ये मन विचलित रहता है जिसे योग से स्थिर किया जा सकता है। अच्युतानंद के 'ब्रह्म शांकुल' में इस उलट साधना का वर्णन किया है। बलराम दास ने भी अपनी रचना 'ब्रह्मगिता' में इस उलट साधना का वर्णन किया है।

बलराम दास, जगन्नाथ दास और अच्युतानंद दास आदि ओड़िशा के पंचसखा कवियों ने योग साधना प्रसंग में बहुत से ग्रंथों की रचना की है। उनके द्वारा प्रचारित योगमार्ग में गुरु की भूमिका महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार मनुष्य के अंदर परमात्मा विद्यमान हैं। योग साधना से ही उनका परिचय मिल सकता है। अच्युतानंद के अनुसार इस साधना में शरीर के विशेष अंगों पर सिद्ध प्राप्त करने में बारह वर्ष आवश्यक है। बलराम दास योग साधना की उपयोगिता का विस्तृत वर्णन करते हुए कहते हैं कि – एक बार जब शरीर से प्राण चला जाता है वह पुनः लौट कर नहीं आता। पर्वत जितना सोना दान देने पर भी, अनेक प्रकार से पूजा अर्चना करने पर भी या फिर हरि, हर आदि के सेवा करने पर भी लाभ नहीं मिलता। इसीलिए जीवन रहते हुए इस आत्मज्ञान को प्राप्त कर लेना चाहिए। 'दांडी रामायण' में अष्टांग योग को महत्व दिया गया है। बलराम दास ने 'दांडी रामायण' में योग प्रसंग में शरीर भेद का वर्णन किया है। शरीर भेद का अर्थ है शरीर में स्थित षड़चक्र। योगमार्ग के प्रसंग में संयम और ब्रह्मचर्य को भी बलराम दास ने महत्व दिया है।

ओड़िआ निर्गुणवादी कवियों में 'पिंड ब्रह्मांड' तत्व की विस्तृत व्याख्या मिलती है। बौद्ध, नाथ, वैष्णव, सहजीया एवं महिमा धर्म में भी यह दृष्टि विद्यमान है। भारत के विभिन्न प्रादेशिक साहित्य में भी यह देखने को मिलता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार ब्रह्म और आत्मा एक और अभिन्न हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो पिंड ब्रह्मांड का अर्थ – जो इस शरीर में है वही ब्रह्मांड में है, दोनों के सृष्टि उपादान एक हैं और सृष्टिकर्ता भी एक हैं। वैष्णव कवि बलराम दास ने बिंदु को ब्रह्म और ब्रह्मांड को ब्रह्ममय कहा है। यही बिंदु सभी रसों का समाहार है। यह रस जब शरीर को त्याग देता है तब प्राणी मृत्यु को प्राप्त करता है। आत्मज्ञान को महत्व देते हुए बलराम दास ने कहा है कि अपने को पहचानने पर ही ब्रह्मांड को जाना जा सकता है। इस साधना मार्ग में संयम अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति अपने मन को संयमित रख कर सांसारिक माया से दूर रह कर शून्य रूपी परमब्रह्म को प्राप्त करने के लिए साधना करता है वही सच्चा योगी होता है। उसे ही अंतर में परमब्रह्म का प्रकाश दिखता है। कवि बलराम दास के 'ब्रह्मांड भूगोल' और अप्रकाशित 'ब्रह्मगिता' के विभिन्न अध्याय में भी 'पिंड ब्रह्मांड' का वर्णन किया है। बलराम दास ने 'विराटगीता' में शरीर के अंदर विश्व ब्रह्मांड की परिकल्पना भौगलिक प्रतीकों के माध्यम से किया है। उनके 'विराटगिता' में उन्होंने कहा है–

ब्रह्मांड में जो कुछ है – वह सब पिंड में भी है
पिंड– ब्रह्मांड एक हैं – तुम्हारे समक्ष बता दिया तत्व
ब्रह्मांड में डूब कर न मरो – इस पिंड में सब हित करो।"
(विराटगीता, चतुर्थ अध्ययाय) (अनूदित)

अच्युतानंद ने भी अपने बहुत से ग्रंथों में ब्रह्म और ब्रह्मांड दोनों को पिंड के अंदर ही बताया है। सारला दास की रचना के बहुत से स्थलों पर इस विचारधारा का बार–बार उल्लेख मिलता है। उनके महाभारत के आदिपर्व में अग्निदेव द्वारा पांडु को इस पिंड ब्रह्मांड के बारे में वर्णन करते हुए दिखाया गया है। जगन्नाथ दास के 'ब्रह्मांड भूगोल चूड़ामणि' और 'नित्यद्वादश स्कंध' में भी पिंड ब्रह्मांड के तत्व का वर्णन मिलता है। बलराम दास ने 'अमरकोष गीता' में एक सुन्दर दृष्टान्त द्वारा यह स्पष्ट किया है कि जैसे हजार घड़ों में जल भरने पर प्रतिबिम्ब सभी में समान रूप से दिखाई देता है और घड़ा टूटने पर जल शून्य में लीन हो जाता है, उसी प्रकार ब्रह्म समस्त शरीरों में निराकार रूप में व्याप्त है और स्थूल शरीर के नष्ट होने पर आत्मा परमात्मा में समा जाती है। पंचसखाओं ने पिंड और ब्रह्माण्ड की समस्त कल्पना को पुरी के श्रीजगन्नाथ में एकत्रित देखा है। उनकी दृ ष्टि में जगन्नाथजी ही ब्रह्माण्ड पुरुष हैं और यह शरीर उनका अधिष्ठान है। अच्युतानन्द ने श्गरुड गीताश में कहा है कि श्रीनीलकन्दर में जगन्नाथ ने बुद्ध रूप में आविर्भाव लिया है। बलराम दास ने 'विराट गीता' में पुरी के जगन्नाथ मन्दिर को शरीर का प्रतिरूप बताते हुए घुटने से लेकर सिर तक के अंगों में मन्दिर के विभिन्न स्थानों का निर्धारण किया है। 'भाबना बरश में अच्युतानन्द ने चतुर्धा मूर्ति की अपूर्व व्याख्या की है। उनके अनुसार जगन्नाथ स्वयं परम सत्ता और अव्यक्त चेतना हैं, बलभद्र उनकी सृजन इच्छा से उत्पन्न पुरुष–कल्पना है, सुभद्रा उनका अंग–शरीर अर्थात् प्रकृति है और सुदर्शन तीनों को एकसूत्र में बाँधने वाला त्रिगुण है। अच्युतानन्द ने 'गरुड गीता' में आदि पुरुष को केवल ज्योति–स्वरूप बताया है। वह ज्योति आनन्द भी है और निरानन्द भी, उससे ज्योति का उदय होता है और उसी में विलीन हो जाती है। पंचसखाओं के अनुसार पिंड, ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्डातीत तीनों के बीच कोई भेद नहीं है। पिंड की चेतना पिंड में बन्द नहीं रहती, क्योंकि एक के भीतर ही अनेक और सर्वव्यापी की समस्त कला अवस्थित रहती है। इसी अनुभव से पिंड–ब्रह्माण्ड की साधना का आरम्भ होता है।

अच्युतानन्द के अनुसार ब्रह्म अरूप और शून्य होते हुए भी सर्वव्यापी है तथा पुरुष और प्रकृति दोनों उसी में समाए हुए हैं।

बाह्य मंडल में जो परम सत्ता साधक की दृष्टि को प्रकाशित करती है, वही अन्तर में भी प्रत्यक्ष होती है। उन्होंने 'छयालिश पटलश में कहा है कि ईश्वर सभी के हृदय में विराजमान है और वह एक साथ बोलता भी है और सुनता भी है। यह दृष्टि वेदान्त के अद्वैत सिद्धान्त से प्रभावित होते हुए भी तंत्र की काया–साधना से विशेष रूप से जुड़ी है। तंत्र का मूल आग्रह यह है कि परम सत्ता केवल शून्य या दूरस्थ नहीं है, वह प्रत्येक पिंड के भीतर ही उपलब्ध है। पंचसखाओं ने तत्कालीन समाज में प्रचलित कृष्ण और राम की धर्मकथाओं में भी जीव और परम तत्त्व की इसी व्याख्या को समाहित किया।

वैष्णव कवियों की साधना में ओंकार को केन्द्रीय महत्त्व प्राप्त है। बलराम दास ने 'छतिश गुप्त गीता' में ओंकार को स्वयं ब्रह्म का स्वरूप बताया है। उनके अनुसार ओंकार के मध्य में षड़चक्र और चौदह भुवन स्थित हैं। ओंकार से ही स्वर्ग, पाताल और समस्त देवगण उत्पन्न हुए हैं तथा इसी में ब्रह्मरन्ध्र (गोलाहाट) अवस्थित है। ओंकार निर्गुण और सगुण दोनों है और इसी में अनन्त नाम समाहित हैं। पंचसखाओं के अनुसार ओंकार स्वयं जगन्नाथ का रूप है। अच्युतानन्द ने 'तुलाभिणा' में शिव द्वारा पार्वती को समझाते हुए सृष्टि–क्रम का वर्णन किया है। उनके अनुसार महाशून्य ज्योतिरूप है, ज्योति से स्थूल रूप, स्थूल से अर्द्धमात्रा और अर्द्धमात्रा से ओंकार की उत्पत्ति हुई है। अन्यत्र उन्होंने कहा है कि महाशून्य से शून्य और शून्य से प्रणव की सृष्टि हुई। ओंकार से ही पिंड की कल्पना हुई और भूत, समीरण तथा आत्मा आदि तत्त्व उत्पन्न हुए। इस प्रकार पंचसखाओं की दृष्टि में ओंकार ही समस्त सृष्टि का मूल आधार है। यह विचार उनके निर्गुण चिन्तन को शब्द–ब्रह्म की परम्परा से जोड़ता है जिसमें नाद, प्रणव और परम सत्ता एक ही तत्त्व के विभिन्न स्तर हैं।

निष्कर्ष

ओड़िआ साहित्य वैष्णव धारा में निर्गुण मत का एक गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है। कई निर्गुणवादी मत की स्थापना वैष्णव कवि द्वारा अपने ग्रंथों में किया गया है। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में निर्गुण और सगुण दो भिन्न और विशिष्ट धाराएँ देखने को मिलती है। किंतु ओड़िआ साहित्य में निर्गुणवादी मतों के प्रचार में वैष्णव कवियों का बहुत बड़ा योगदान है। जैसे तुलसीदास की रचनाओं में सगुण और निर्गुण का समन्वय देखने को मिलता है वैसे ही ओड़िआ वैष्णव कवियों में उस निर्गुण निराकार तत्व के प्रति एक विशेष आस्था देखने को मिलती है। वेद एवं बौद्ध मत में जिन निर्गुणवादी विचारधाराओं का पोषण हुआ है ठीक वही या फिर थोड़े परिवर्तन के साथ वही वैचारिकता वैष्णव कवियों में पाया जाता है। यह प्रवृत्ति उनके परवर्ती कवियों में भी पाया जाता है। निर्गुण तत्व जैसे निराकार और सर्वव्यापी ब्रह्म की संकल्पना, शून्यवाद, अद्वैतवाद, ईश्वर प्राप्ति के लिए योग साधना की आवश्यकता तथा पिंड ब्रह्मांड जैसे मत, अवतार भक्ति के रचनाओं में भी पाए जाते हैं। ओड़िआ वैष्णव साहित्य में निर्गुण तत्व के वर्णन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए इस पक्ष को अधिक विस्तृत रूप से समझना आवश्यक है। जिससे भविष्य में होने वाले शोध में हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के साथ भी इसकी तुलना की जा सकती है। दोनों भाषाओं के साहित्य में व्याप्त ये निर्गुण और सगुण मत के विशेष अध्ययन से दोनों भाषाओं से जुड़े समाज की तत्कालीन चित्वृत्ति, उनके इतिहास और उनके आज की अवधारणा को और अच्छे से समझा जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. Pracheena Odia Sahitya Re Nirgun Dhara, Dr. Nagendra Nath Pradhan, Dharmagrantha Store, Cuttack, Odisha, 1986 (ओड़िआ)
2. Odia Sahitya Ra Itihasa, Dr. Surendra Kumar Moharana, A.K. Mishra Publisher, 8th Edition, 2022 (ओड़िआ)
3. Odia Sahitya ra Madhya Parba O Uttara Madhyaparba, Shri Surendra Mohanty, Shri Surendra Mohanty, Cuttack Student Store Publication, Cuttack. Odisha, 9th Edition, 2019 (ओड़िआ)
4. Odia Sahityara Samajika O Sanskrutika Bikashadhara, Krushna Chandra Pradhan, Shree Prakashan, Cuttack, 4th Edition, 2019 (ओड़िआ)
5. Balaram Das O Odia Ramayana, Dr. Narendra Nath Mishra, Odisha Sahitya Academy
6. बौद्ध दर्शन में शून्यवाद, डॉ अशोक कुमार, परिमल पब्लिकेशन, 2018
7. अद्वैत वेदांत एवं शून्यवाद का तत्व दर्शन, डॉ. सरिता रानी, भारती प्रकाशन, 2015
8. हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल
9. हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्विवेदी
10. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी
11. शोध आलेखरूतुलसीदास के काव्य में समन्वय भावना, पिंकल मीना, अपनी माटी पत्रिका, अगस्त 2018
12. दांडी रामायण, बलराम दास, धर्म ग्रंथ स्टोर, कटक, ओड़िशा (ओड़िआ)